F-11
D.El.Ed-1st year

कलाओ का वर्गीकरण
(CLASSIFICATION OF ART)

* संगीत कला ⇒ संगीत के विविध आयाम — गायन, वादन व नृत्य। गायन के क्षेत्र में तानसेन, बैजू से लेकर पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज के नाम विशिष्ट सम्माननीय है। वादन के क्षेत्र में उस्ताद अल्ला खां (तबला), रविशंकर (सितार) बिस्मिल्लाह खां (शहनाई) हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी), रामनारायण (सारंगी), लाल मणि मिश्र (वीणा) आदि वादन क्षेत्र के सशक्त हस्ताक्षर हैं। नृत्य के क्षेत्र में उदयशंकर (बेले) गोपीकृष्ण (ओडिसी) राजा - राधा रेड्डी (कुचीपुडी) आदि के अग्रणी कलाकार हैं।

संगीत काव्य की भांति भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। संगीतकार भावों की व्यंजना नाद के माध्यम से करता है। संगीत मानव को ही नही पशुओं को भी रस - विभोर कर देता है। रामायण में संगीत के अनेक उद्धरण मिलते है गंधर्व, संगीत, आतोद्य, गीत, स्थान, स्वर, श्रुति, मूर्च्छना, जाति वीणा, विपंची, मत्तकोकिल, वेणु, शंख, दुंदुभि, भेरी, पटह, मृदंग, डिण्डिम, मार्ग, शम्या, नृत्य आदि संगीत का उल्लेख मिलता है।

आज के समग्र संगीत की दो धाराएं प्रचलित है → 1. शास्त्रीय संगीत, 2 लोक संगीत तथा लोकप्रिय संगीत। भारतीय संगीत की आधारशिला आध्यात्मिक है। प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि संगीत की उत्पत्ति देवताओं से हुई है। संगीत सर्वप्रथम ब्रह्मा के पास था ब्रह्मा ने यह कला शिव को दी शिव ने यह कला सरस्वती को दी। संगीत में कल्पना व सृजन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव में कल्पना चित्र शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव में निहित चित्र माध्य से संगीत का रूप ले लेती है।

Scanned by CamScanner

F-11
D.El.Ed - 1st year

संगीत का परिचय (INTRODUCTION TO MUSIC)

हमारे देश में संगीत की परम्परा बहुत प्राचीन है। संगीत का उद्गम भी वेदों से हुआ है। यज्ञ के अवसर पर 'सामगान' की प्रथा भी। धीरे-धीरे संगीत धार्मिक क्षेत्र से बाहर निकल कर मुक्त वातावरण में प्रवेश कर गया। गीत के साथ वाद्य यंत्रों का भी प्रचलन हुआ तो नृत्य का भी विकास हुआ और अन्त में नाट्य भी उसमें आ मिला। संगीत के आकार के विकास को निम्न चित्र द्वारा आसानी से समझा जा सकता है —

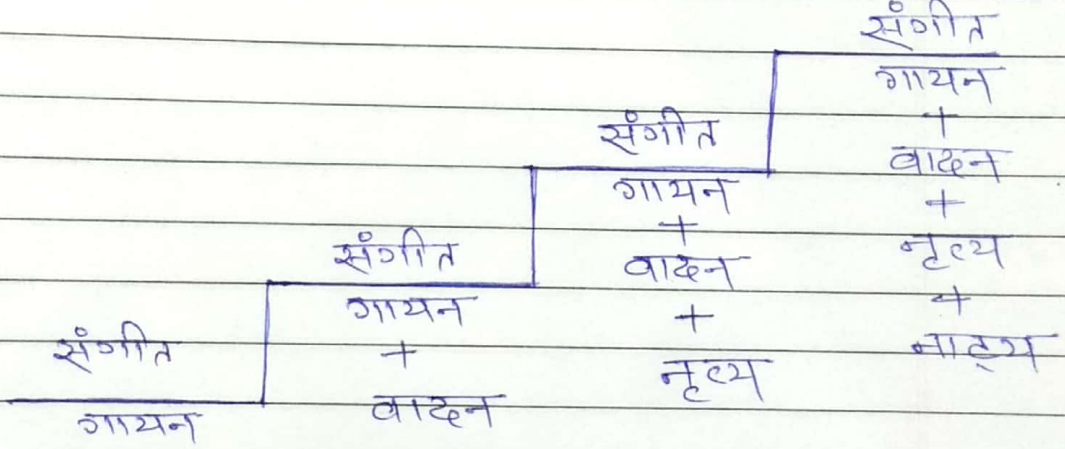

संगीत की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF MUSIC)

रामअवतार वीर - के अनुसार ⇒ संगीत विभिन्न ध्वनियों को मिलाने वाली वह कला है जिसके द्वारा मनोभावों के प्रदर्शन में रोचकता, माधुर्य और सुन्दरता आती है।

उपेन्द्रचंद्र सिंह के अनुसार ⇒ संगीत एक यौगिक विद्या है जो मानव की आत्मोन्नति की चरम सीमा यानी मोक्ष के द्वारा तक पहुँचा देती है।

पण्डित सारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में लिखा है — गीतं वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते' गायन, वादन तथा नृत, इन तीनों कलाओं के सम्मिलित रूप को संगीत कहते हैं।

Scanned by CamScanner